Class 12 Subject: hindi (srajan)

Topic -ch10 (भय)

प्रश्न/उत्तर करो।

प्रश्न 1.
साहसी व्यक्ति कठिनाई में फँस जाने पर क्या करता है?
उत्तर:
साहसी व्यक्ति कठिनाई में फंस जाने पर डरता नहीं। उससे बचने का उपाय करता है।

प्रश्न 2.
भय क्या है?
उत्तर:
किसी भावी संकट का आभास होने और स्वयं में उससे बचने की सामर्थ्य न देखकर जो मनोविकार मनुष्य के मन में पैदा होता है, उसको भय कहते हैं।

प्रश्न 3.
क्रोध और भय में क्या अन्तर है?
उत्तर:
क्रोध के लिए भय कारक का ज्ञान होना आवश्यक है किन्तु भय के लिए इतना जानना ही बहुत है कि संकट आएगा अथवा हानि होगी।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4.

भय भीरुता में कब बदल जाता है?

उत्तर:

जब भय व्यक्ति का स्वभाव बन जाता है तो वह भीरुता में बदल जाता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5.

ऐसी कौन-सी भीरुता है, जिसकी प्रशंसा होती है?

उत्तर:

संसार में एकमात्र भीरुता जिसकी प्रशंसा होती है, धर्मभीरुता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1.

आशंका और भय में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

किसी भावी आपत्ति की भावना अथवा दु:ख के कारण का पता चलने पर मन में उत्पन्न होने वाले आवेगपूर्ण अथवा स्तम्भकारक मनोविकार को भय कहते हैं। आशंका एक ऐसा आवेगरहित मनोविकार है जो दु:ख की सम्भावना के अनुमान से ही उत्पन्न हो जाता है।

प्रश्न 2.

व्यापारी द्वारा नया व्यापार शुरू न करने, पण्डित का शास्त्रार्थ में भाग न लेने का मूल कारण क्या हो सकता है?

उत्तर:

व्यापारी किसी हानि के भय से किसी नए व्यापार में हाथ नहीं डालता तथा पण्डित पराजित होने और मानहानि होने के भय से शास्त्रार्थ से दूर भागता है। दोनों के मूल में भीरुता की भावना रहती है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3.

भय की अधिकता किसमें रहती है?

उत्तर:

भय की अधिकता असभ्य तथा जंगली लोगों में अधिक होती है। भय के कारण वे सम्मान करते हैं। उनके देवी-देवता भय के प्रभाव से ही कल्पित होते हैं। जिससे वे डरते हैं उसकी पूजा करते हैं। किसी आपत्ति अथवा संकट के भय से बचने के लिए ही वे देवी-देवताओं की पूजा करते हैं।

प्रश्न 4.

सभ्य और असभ्य प्राणियों के भय में क्या अन्तर है?

उत्तर:

असभ्य प्राणियों में भूत-प्रेत, पशु आदि का भय अधिक होता है। उनको किसी व्यक्ति द्वारा अपनी सम्पत्ति जबरदस्ती छीने जाने का भय रहता है। सभ्य प्राणियों का भय कुछ अन्य प्रकार का होता है। उनको भय रहता है कि कोई चालाक आदमी नकली दस्तावेज, कानूनी बहस तथा झूठे गवाहों को

Scanned with CamScanner

अदालत में पेश करके उनको धन-सम्पत्ति से वंचित न कर दे।

RBSE Class 12 Hindi सृजन Chapter 10 भय

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
दुःख की छाया को हटाने के लिए व्यक्ति किन बलों का उपयोग करता है? और कैसे?
उत्तर:
प्रत्येक प्राणी होश सँभालते ही अपने चारों ओर दुःखपूर्ण संसार रच लेता है। इसको क्रमश: अपने ज्ञान-बल से तथा कुछ बाहुबले से सुखमय बनाता है। क्लेश और बाधा को वह जीवन का सामान्य हिस्सा तथा सुख को उसका अपवाद समझता है। धीरे-धीरे मनुष्य की आयु बढ़ती है और उसके ज्ञान तथा शारीरिक शक्ति की वृद्धि होती है। उसके परिचय-

Scanned with CamScanner

क्षेत्र का विस्तार होता है तथा उसके ज्ञान की भी वृद्धि होती है। पहले वह अपने माता-पिता के सम्पर्क में आता है तथा धीरे-धीरे परिवार तथा बहुत से लोग उसके सामने प्रतिदिन आते हैं। वह जान लेता है कि ये लोग उसको सुख पहुँचाएँगे, दु:ख नहीं देंगे। धीरे-धीरे उसकी झिझक खुलती जाती है। उसका ज्ञान बढ़ता जाता है। उसका आत्मबल तथा शारीरिक बल भी बढ़ता जाता है। तब वह :ख से मुक्त होने के लिए तथा सुख पाने के लिए उनका उपयोग करता है।

अपने आस-पास के लोगों, पशुओं, विश्वासों आदि से दु:खी होने का जो भय उसके मन में रहता है वह धीरे-धीरे दूर होता है। शारीरिक बल की वृद्धि भी उसमें आत्म-विश्वास पैदा

Scanned with CamScanner

करती है तथा उसको दु:ख सहने तथा उसे हटाकर सुख पाने की अपनी शक्ति पर विश्वास हो जाता है। यह सब धीरे-धीरे विकास के सामान्य नियम के अनुसार होता है।

प्रश्न 2.

"सभ्यता से अन्तर केवल इतना पड़ा है कि दु:ख-दान की विधियाँ बहुत गूढ़ और जटिल हो गई हैं।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

आगामी दु:ख की कल्पना अथवा सम्भावना से मनुष्य भयभीत होता है। आरम्भ में उसको अपरिचितों, पशुओं तथा कुछ प्रचलित काल्पनिक विश्वासों से भी डर लगता है। संसार में दु:ख को वह अपने चारों ओर बिखरा पाता है। दु:ख के कारण भी सर्वत्र उपस्थित रहते हैं। असभ्य जातियों में दूसरों से कष्ट पाने तथा भयभीत होने का भाव अधिक पाया जाता है। सभ्यता का विकास होने पर मनुष्य को भरोसा हो जाता है कि लोग उसको दु:ख नहीं पहुँचाएँगे। समाज और

Scanned with CamScanner

कानून उनको ऐसा नहीं करने देगा।

सशक्त जन अशक्तों को दु:ख देते ही हैं। धन-सम्पन्न लोग तथा देश निर्धनों का शोषण करते ही हैं। दूसरों को दु:ख देने की यह परम्परा नई नहीं है। सभ्यता के विकास के साथ दूसरों को दु:खी करने और सताने के तरीके अवश्य बदल गए हैं। पहले कोई भी शक्तिशाली मनुष्य दूसरे के बाग-बगीचे, जमीन, घर-मकान, रुपया-पैसा आदि को जबरदस्ती उससे छीन लेता था और वह कुछ नहीं कर पाता था। लूटपाट का यह रूप सभ्यता के विकास के साथ बदल गया है। अब बलात् अपनी सम्पत्ति छीने जाने का डर तो मनुष्य को नहीं सताता परन्तु उसका एक दूसरा रूप उसको आतंकित करता रहता है। आज कोई चालाक आदमी नकली कानूनी दस्तावेज तैयार कराकर, झूठे गवाह अदालत में पेश करके तथा वकीलों को पैसा देकर अदालत में बहस

Scanned with CamScanner

कराकर किसी दूसरे की सम्पत्ति को हड़पने में समर्थ हो सकता है। कानून का सहारा लेकर वह उसको उसकी सम्पत्ति से वंचित कर सकता है तथा स्वयं उसका मालिक बन सकता है।

प्रश्न 3.
भय के साध्य और असाध्य दोनों रूपों को सोदाहरण समझाइए।
उत्तर:
भय के साध्य और असाध्य दो रूप हैं। असाध्य रूप वह है जिसका निवारण प्रयत्न करने पर भी न हो सके अथवा असम्भव जान पड़े। उसका साध्य रूप वह होता है कि जिसको प्रयत्नपूर्वक किया जा सकता हो । भय के किसी कारक से यदि हम प्रयत्न करके बच सकते हैं तो यह उसका साध्य रूप माना जाएगा। उदाहरणार्थ-दो मित्र आपस में बातचीत करते हुए प्रसन्तापूर्वक एक पहाड़ी, नदी के किनारे जा रहे हैं। अचानक उनको किसी शेर की दहाड़ सुनाई देती

Scanned with CamScanner

है। इससे वे भयभीत हो उठते हैं तथा शेर से बचने के लिए वहाँ से भाग जाते हैं अथवा किसी स्थान पर छिप जाते हैं अथवा किसी पेड़ पर चढ़ जाते हैं। इस प्रकार उनकी रक्षा हो जाती है। उनके इस भय को प्रयत्न साध्य कहेंगे।।

भय का कौन-सा रूप साध्य है अथवा कौन-सा असाध्य ! इसका निश्चय मनुष्य के स्वभाव पर निर्भर करता है। मनुष्य की विवशता तथा अक्षमता की अनुभूति के कारण ही किसी भावी कष्ट की अनिवार्यता निश्चित होती है। यदि मनुष्य साहसी होता है तो वह भयभीत नहीं होता है और यदि डरता भी है, तो उससे बचने का उद्योग करता है। ऐसी स्थिति में भय का स्वरूप साध्य हो जाता है। यदि उसको दु:ख के निवारण का अभ्यास नहीं होता अथवा उसमें साहस का अभाव होता है तो वह भय के कारण स्तम्भित हो जाता है

Scanned with CamScanner

तथा उसके हाथ-पैर भी नहीं हिलते। ऐसी स्थिति में हमें भय के असाध्य रूप के दर्शन होते हैं।

प्रश्न 4.

मनुष्य के भय की वासना की परिहार कैसे होता है?

उत्तर:

किसी भावी आपत्ति अथवा दु:ख के कारण के साक्षात्कार से मनुष्य के मन में भय का भाव उत्पन्न होता है। आरम्भ से ही वह अपने आस-पास दु:खपूर्ण वातावरण फैला देखता है। उस दु:ख से बचने के उपाय का ज्ञान न होने से उसमें भय पैदा हो जाता है। जब बच्चा छोटा होता है तो वह सभी से डरता है। वह किसी अपरिचित को देखकर घर में घुस जाता है। पहली बार सामने आने वाले व्यक्ति तथा अज्ञात वस्तुओं के प्रति उसके मन में भय की ही भावना रहती है।

मनुष्य के मन से इस भय के भाव का निवारण धीरे-धीरे ही

Scanned with CamScanner

होता है। शारीरिक शक्ति बढ़ने के साथ ही उसका आत्मबल बढ़ता है। शनै: शनै: उसका ज्ञान बल भी बढ़ता है। इनकी वृद्धि होने पर उसके मन से दु:ख की छाया हटती जाती है तथा दु:ख के कारण निवारणीय बन जाते हैं तथा उसके प्रति भय का जो भाव उसके मन में था, वह दूर हो जाता है। सभ्यता के विकास से भी भय का परिहार होता है। वैसे भी भय मनुष्य की शक्तिहीनता तथा अक्षमता का परिणाम होता है। शरीर बल तथा ज्ञान बल की वृद्धि होने पर कोई कष्ट अथवा दु:ख अनिवार्य नहीं रह जाता तथा मनुष्य उससे मुक्त होने का उपाय जान जाता है। ऐसी अवस्था में उस कारण से उत्पन्न भय भी उसके मन से दूर हो जाता है। उदाहरणार्थ, पहले मनुष्य भूतों और पशुओं से डरता था। किन्तु अब सभ्यता के विकास के साथ उसका ज्ञान बढ़ गया है और वह अब इनसे नहीं डरता।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5.

निर्भयता के लिए शुक्ल जी ने क्या उपाय बताए हैं?

उत्तर:

मनुष्य अपने जन्म के समय से ही अपने चारों ओर के वातावरण को दु:खमय पाता है और अपनी अक्षमता के वशीभूत होकर वह दु:ख को अनिवार्य पाता है और दु:ख के कारण के प्रति उसका मन भय से भर जाता है। शुक्ल जी ने निर्भीकता के लिए निम्नलिखित उपाय बताए हैं

1. शारीरिक बल में वृद्धि-शारीरिक बल की वृद्धि होने पर मनुष्य दु:ख के कारण को परिहार्य मान लेता है तथा उससे उसको डर नहीं लगता। साहसी व्यक्ति निर्भीक भी होते हैं।
2. ज्ञान-बल-जब मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है तो उसको भयभीत करने वाले कारणों का पता चल जाता है और उनसे बचने के उपाय ज्ञात हो जाते हैं। तब भी वह निर्भीक हो जाता है।

Scanned with CamScanner

3. सभ्यता का विकास- भय असभ्य तथा जंगली लोगों में अधिक होता है। सभ्यता का विकास होने पर मनुष्य में निर्भीकता आ जाती है। अपरिचित के प्रति भय, भूत-प्रेत के प्रति भय तथा पशुओं के प्रति भय की भावना सम्भ्यता के विकास के साथ पुरुषों के मन से दूर हो जाती है।
4. सुसंस्कृति और शील-मनुष्य जब सुसंस्कृत और शीलवान हो जाता है तो किसी को कष्ट देने अथवा अपनी शक्ति का प्रयोग उसको पीड़ित करने के लिए नहीं करता। ये चीजें असभ्यता का लक्षण हैं। इनसे मुक्त होने पर मनुष्य द्वारा मनुष्य को दुःख देने की सम्भावना न रहने पर समाज में निर्भीकता का वातावरण उत्पन्न होता है।
5. पराक्रम और उत्पीड़क को दण्डित करना—समाज में निर्भीकता का भाव पैदा करने के लिए असभ्य तथा उत्पीड़न करने वालों को दण्डित करना भी आवश्यक होता है। दुष्ट लोग हर समाज में होते हैं जो सज्जनों को सताते हैं। उनको दण्ड द्वारा ही

Scanned with CamScanner

नियन्त्रित किया जा सकता है।

6. आदर्श शासन-व्यवस्था-संसार में अब दो सबल देशों के बीच आर्थिक स्पर्धा तथा एक सबल तथा दूसरे निर्बल देश के मध्य शोषण की क्रिया चल रही है। इससे भी संसार में भय फैला हुआ है। लोगों को शोषण से मुक्त करके ही निर्भय बनाया जा सकता है। इसके लिए शासन सत्ता का आदर्श तथा न्यायप्रिय होना जरूरी है।

Scanned with CamScanner